रात्री क्लास   ओम शान्ति   23-5-67

बच्चे सब किसकी याद में बैठे हैं? बाप और दादा। शिव बाप, दादा है प्रजापिता ब्रह्मा यह दोनों ही ठहरे ऊंच ते ऊंच। वो निराकार, वो साकार। बच्चे जानते हैं कि बाप शिव और दादा ब्रह्मा। इनको शिव बाबा से वर्सा लेना है विश्व के राजाई का। यह भी भारतवासी जानते हैं कि आज से 5000 वर्ष पहले L.N का राज्य था। यह 84 का चक्र याद करना है। तुम सब ब्राह्मण ने ही 84 का चक्र लगाया है। ब्राह्मण सो देवता .... सो शूद्र बनते हो। सतोप्रधान से सतो रजो तमो भी बनते हो। अब तुम ब्राह्मण हो फिर देवता ... शूद्र बनेंगे। फिर ब्राह्मण बनेंगे। यह नॉलेज [illegible] बाप ने दी है। सतयुग को सुखधाम कलयुग को दुखधाम कहा जाता है। आत्माएं शान्ति धाम से आती हैं। शान्तिधाम तो जहां हम आत्माएं निवास करते हैं। तो सतयुग है सुखधाम फिर पुनर्जन्म लेते-2 कलियुग दुःखधाम में आते हैं। यह है 84 का चक्र। जो तुम चक्र लगाते हो [illegible]। शिव बाबा सबका बाप है तो वो बेहद का बाप है। लौकिक बाप के होते भी [illegible] में याद करते हैं पारलौकिक बाप को। अब बाप आये हैं पुरुषोत्तम के लिये पुरुषार्थ करते हो। जो [illegible] वो पावेंगे। अब यह दुनियां में मानते हैं कि सतयुग में मनुष्य बहुत कम होते हैं। इस समय 500 करोड़ हैं। सतयुग में 9 लाख भी होंगे यदि होंगे तो। बाकी इतना कहाँ जावेंगे। [illegible] यह समझने की थोड़ी बात है। तुम बच्चे हो पुरुषार्थी संगम युग पर। मनुष्य हैं [illegible]। सिर्फ तुम्हारा संगम युग पर है बाकी सारी दुनिया कलयुग में है। अब बाप [illegible] हैं सतयुग की स्थापना करना। [illegible] बाप ने ही स्थापना किया होगा। तुम यहाँ आते हो बेहद के बाप के पास। वो भी आत्माओं से बात करते हैं शरीर द्वारा। आत्मा ही बोलती और सुनती है। [illegible] जो कहते हैं उनको [illegible] है।

[illegible]

[illegible] सतयुग में विकार होता नहीं। अब तुम सम्पूर्ण विकारी बन गये हो [illegible] निर्विकारी बनना है। अब अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो। जितना जास्ती याद करेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। मालूम है [illegible] संगम पर बनते हो यह [illegible] और कल्याणकारी है। [illegible] पवित्र बनना है और बाप को याद करना है। उठते, बैठते, चलते शिव बाबा को याद करो। और दैवी गुण भी धारण करने हैं। तुम बच्चे जानते हो कि हम बाप-दादा के बच्चे हैं बाबा। शिव बाबा से लेते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा की आत्मा को भी उनसे वर्सा मिलता है। अब तुम कोई [illegible] पुरुषार्थ कर रहे हो। पुरुषार्थ ना किया तो ऊंच पद नहीं। पुरुषार्थ तो [illegible] के लिए बहुत [illegible] है तुम ही गॉड फादरली स्टुडण्ट, यह [illegible] भी है। कोई भी [illegible] जाते। पवित्र नहीं बन सकते। वो है [illegible] मार्ग के [illegible] गुरू। ओम

24-5-67:- रात्री क्लास:-> इस स्कूल में कोई भी बूढ़े हो बच्चे हो लगड़े [illegible] सब पढ़ सकते हैं। पढ़ना तो आत्मा को ही है। अब परमात्मा सब आत्माओं को तो नहीं पढ़ावेंगे [illegible] इसलिए तुमको समझाना पड़ता है कि बाबा ऐसे-ऐसे कहते हैं। बाप बच्चों के लिए कहते हैं कि तुम सतोप्रधान विश्व के मालिक थे। बाप ही आकर याद दिलाते हैं। यहाँ आते हो बाप के पास यहाँ सम्मुख आकर बाप से सुनते हो समझते। कोई कोई नये आते हैं तो आग्रह करते हैं कि देखें। बाहर वालों को आने के लिए इजाजत नहीं देते हैं। बाकी मित्र सम्बन्धी हैं तो भी कहाँ नाराज़ नहीं हो जावें तो इजाजत दे देते हैं। [illegible] है कि इतना बाबा की मुरली सुनो समझो। शिव बाबा ने यह-यह समझाया। जो भी बाबा ने सुनाया वो हमने सुना। चले जावेंगे। तुम कहेंगे कि कुछ भी समझा नहीं है रिपोर्ट करना सहज है समझाना और बात है। शिव बाबा को याद भी करते नहीं हैं जो

24-5-67 Z

जैसे कि कुछ भी नहीं समझते हैं। तकदीर में ही नहीं है तो मुश्किल पड़ जाती है।
सहज भी बहुत है परन्तु तकदीर में नहीं है तो कुछ भी नहीं समझेंगे। वास्तव में यह जैसे कि
ईश्वर की दरबार भी है ईश्वर की दरबार है तो दरबार से भी ऊंच है। गुरु नानक की दरबार कहते हैं ना।
फिर भी ऊंच ते ऊंच दरबार है बाप भी कहते कि यहां ऊंचे ते ऊंच पद पाया जाता है। बाप कोई कितनी बड़ी दरबार
है! हर एक धर्म में दरबारें हैं। यह दरबार एक ही बार लगती है। थोड़े समय के लिए पावन बनने की दरबार।
एक अक्षर सुन और अच्छी रीति सुमिरण करना है! कहा जाता है सुमिरण सुमिर-२ सुख पाओ कल-२ कलेश
मिटे सब तन के। जो युक्ति का अर्थ भी सब नहीं समझते सिवाय तुम बच्चों के। जो बच्चे सर्विस पर रहते
हैं उनका ऊंच पद है। क्योंकि बहुतों को रोज़ बताने के निमित्त बनते हैं बच्चों को अच्छी रीति सम-
झना है यह पुरानी दुनिया है। निराकार बाप ही हमारा टीचर भी है तुम्हारी आत्मा आरगन्स द्वारा पढ़ती
भी है फिर औरों को पढ़ाती भी है अपन को आत्मा समझना है जैसे कि भाई को हम बाप का संदेश सुनाते हैं।
देह अभिमान में आने से इतना समझते नहीं हैं। विकार में कारण यह है काम कटारी। तुमको कोई कटारी
मारे तो समझो डाकू खून करते हैं खून-२ कर देते मारते चाहिए, काम कटारी आदि मध्य अन्त दुःख देती है
यह डाकुओं से भी बदतर है। तुम बच्चों को नफरत आती है यहां तुम बाप के पास आते हो। वहां है आसुरी
संग यहां है ईश्वरीय संग आसुरी संग और ईश्वरीय संग। तो ईश्वरीय संग न है तो आसुरी संग है इसको
कहा जाता है सत-संग तारे और तो जन्म जन्मान्तर करते हो अब जानते हो सत शिव बाबा का संग। हमको घ-
ले जाता है जितना पढ़ेंगे, जितना याद की यात्रा में रहेंगे विकर्म विनाश होगा और पवित्र बनेंगे बच्चों
को भी औरों को आप समान बनाने का करना है। खुदाई खिदमतगार भी तुम बनते हो सच्चे-२ सैल-
वेशन आरमी तुम हो, रेड क्रास सोसाइटी तुम हो गोले में रेड क्रास है ना। दिखाया जाता है 4 भाग कैसे
होते हैं अब बच्चे जानते हैं सतयुग त्रेता में तो भक्ति होती नहीं अभी भक्ति का अन्त है बच्चे जानते हैं बाप
आया है तो भक्ति खत्म हो जाती यह भी तुम जानते हो तो फिर औरों को भी समझाना चाहिए बच्चों
को मित्रों आदि पर समझाकर ही उपकार किया जाता है। तुम हो स्वर्ग में ले जाने वाले पंडे! रूहानी
पंडा भी कहा जाता है। बच्चों को एक भी मुरली मिस न करनी चाहिए! कोई न कोई ऐसी
प्वाइन्ट्स आ जाती है जो कि औरों को समझाने में सहज हो। बोलो शिव बाबा ज्ञान का सागर
पतित पावन है। बाप हमको पावन बनाय रहे हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नॉलेज
हमको दे रहे हैं पुजारी से पूज्य बनाय रहे हैं। तुम्हारी आत्मा तो पवित्र थी न शान्तिधाम में।
पीछे चक्र में आती है। इस समय सब पतित हैं यह पतित दुनिया का अन्त है फिर पावन दुनिया
कैसे बने? बाप आकर श्रीमत देते हैं आत्मा ही पतित वा पावन बनती है। अब बाप कहते
हैं कि मुझे याद करो यह नहीं यहां भी लड़ाई है जब कि गीता के भगवान ने राजयोग सिखाया
था। भगवान श्रीकृष्ण नहीं बेहद का बाप ही स्वर्ग का रचयिता है जो, स्वर्ग का वर्सा देते हैं हम
भी ले रहे हैं शिव बाबा आकर श्याम से सुन्दर बनाते हैं शिव बाबा को सदैव सुन्दर भी कहा जाता
ही है भी सुन्दर मुसाफिर तुम बच्चों को काम चिता से उतार ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। काम चिता
पर बैठ सब काले हो जाते हैं फिर तुम बच्चों को अब सुन्दर बनाए रहे हैं भूल जाते हैं
याद को। अपने को आत्मा समझो और याद करना है। बाप एक ही बार आते हैं राज-
योग सिखाने सभी बच्चों को तमोप्रधान दुनिया से सतोप्रधान बनाते हैं। सर्व का सद्-
गति दाता सर्व दुःख हर्ता वाला एक बाप ही है फिर हम सदैव सुख ही सुख देखेंगे यह जानते हो
हमारे सुख के दिन आते हैं ~~अच्छा~~ ३ बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए ~~[illegible]~~
बच्चे [illegible] हैं बाबा हम बाप को भूल जाते हैं [illegible] तो ख्याल है [illegible] बाप को भूल
जाते हो। बाप क्या कहते? निश्चय नहीं आता है कि हम बाप [illegible] करते हैं
देह अभिमान में आने से देह को ही देखते हो बाप को भूल जाते हो आत्मा [illegible]
तुमने आह्वान किया हो अब आया हूँ फिर कहता हूँ कि मुझे याद करो। और
कोई न सिखला सके [illegible] फिर भी तुम भूल जाते हो [illegible]
[illegible]